Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 010 Issue 07 JULY 2024 Pages 24 A.S. Rs 100

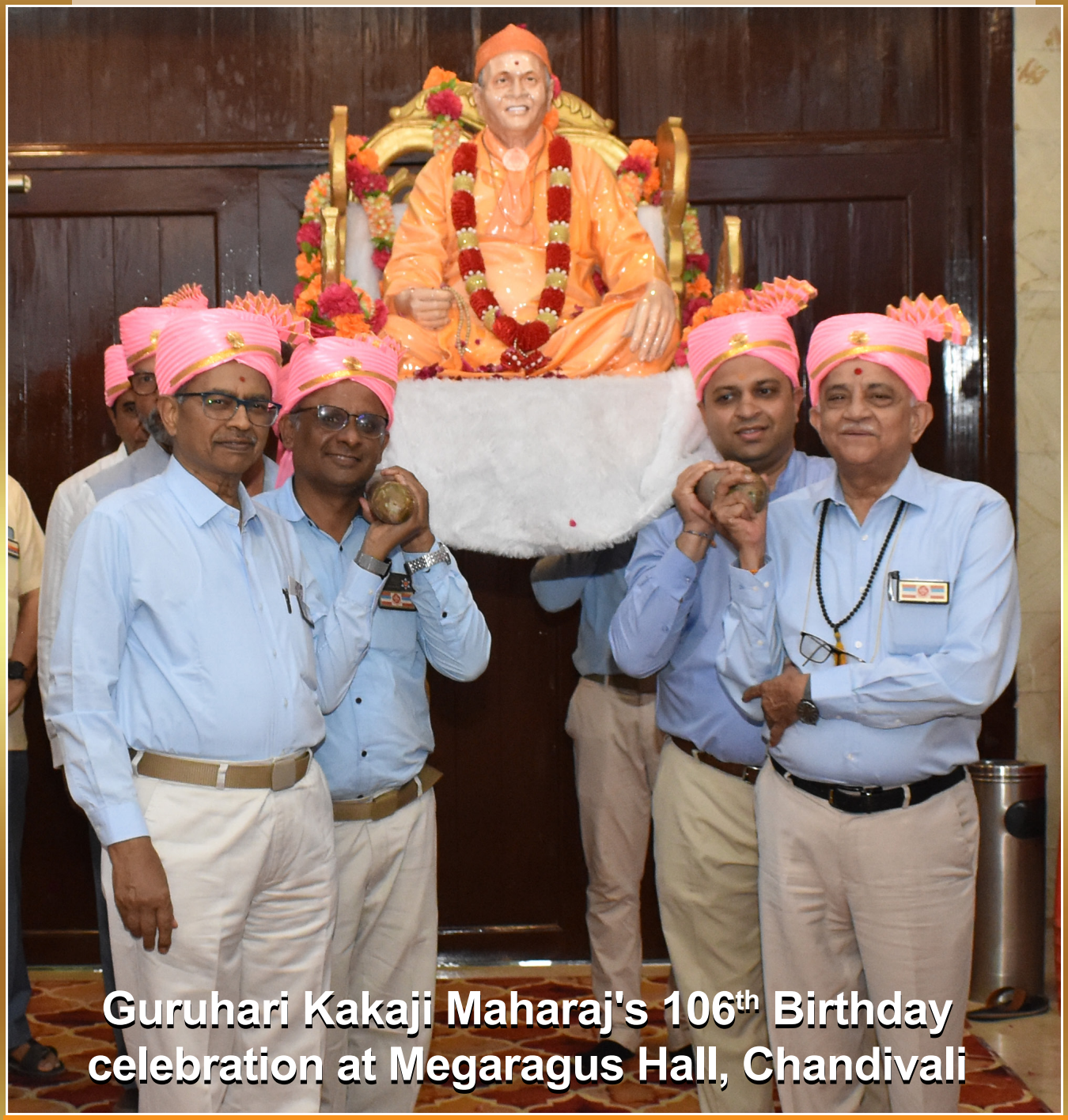

Guruhari Kakaji Maharaj's 106th Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

सत्संग समाचार

❊ शुक्रवार, दि. ७ जून को गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रागट्यपर्व निमित्त विशिष्ट भजन संध्या पवई के नजदिक चांदिवली के Megaragus Hall में भक्तिभाव से हुई।

Bhajan Sandhya at Megaragus Hall, Chandivali

गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रागट्यपर्व निमित्त युवकोंने उन्होंने जो कार्य किया उसका विशिष्ट Video दर्शाया जिसमें बालमंडल के प.भ. हैरतभाई वाढेर (संभाजी नगर)ने काकाजी के प्रागट्य से लेकर स्वधामगमन तक की पूरी यात्रा बहुत रोचक शैली में बताई और उसके मुख्य पडाव पर उस प्रसंग के अनुरुप चुने हुए भजन गायक तथा वादकवृंदने प्रस्तुत किये।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि सन् १९६६ से सन् १९८६ दौरान २० साल में गुरुहरि काकाजी महाराजने जो कार्य किया वो देखकर ऐसा लगता है कि उनका कार्य समझना आसान नहीं है। उनको जब साक्षात्कार हुआ था तब वे योगीबापा को कहते थे कि जैसे मैं आपको देखता हूँ वैसे हूबहू दर्शन मैंने श्रीजी महाराज का किया और वही आपके अंदर प्रगट है। वह बात पूरे समाज में उन्होंने फैलाई। जिन्होंने वह बात मानी, उसका स्वीकार किया उनका काम सहज ही हो गया। काकाजीने ब्राह्मीशक्ति खुल्ली रख दी। काकाजीने गणित की बात को आध्यात्मिकता से जोडकर सरलरुप में समझा दिया। २+२ = ४ सिर्फ यहाँ नहीं, लेकिन चंद्र पर जायेंगे तो वैसा ही होगा वह बात काकाजीने सरल Technique देकर प्रवर्तमान करके दिखाया। इस तरह भगवान हमेशा साकार और प्रगट है तथा अपने गुणातीत संत द्वारा कहीं भी प्रगट हो सकते है वह बात काकाजीने सिद्ध करके दिखाई। काकाजी हमेशा भक्त के भी भक्त बनकर रहे। ऐसे वे भक्तवत्सल स्वरुप थे। भक्त के लिये क्या न हो सके? ऐसी भावना से उन्होंने जीवन जीकर हमारे सामने भक्त का भक्त कैसे बनना वह सिखाया। काकाजी एक सामान्य भक्त के लिये भी अपने सेहत को गिनते नहीं थे। उनकी कृपा से हमें किसी भी कार्य में कभी भी कोई मुश्केली आई नहीं है। जिसने भी पवई

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 2 09-08-2024 18:38:20

मंदिर के Project में सेवा दी है उसको महाराज ज्यादा ही देनेवाले है। सभीका स्वास्थ्य अच्छा रहे और सभी सुखी रहे वही प्रार्थना।

पवई मंदिर के इस **Project** के लिये बडे योगदान की भावना दिखानेवाले प.भ. सतीशभाई दोशी को सभी संतभाईयोंने शाल-पुष्पगुच्छ अर्पण किया।

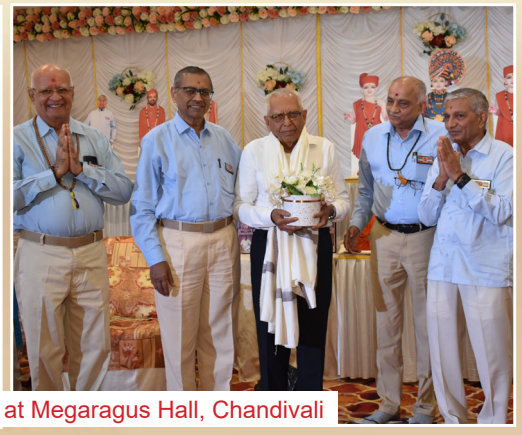

Bhajan Sandhya at Megaragus Hall, Chandivali

❊ शनिवार, दि. ८ जून को गुरुहरि काकाजी महाराज का १०६वाँ प्रागट्यपर्व Megaragus Hall में आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

इस महोत्सव का विषय 'अल्प संबंधना तव आभासे अम व्यक्तित्व शून्य बने...' ऐसा रखा गया था।

सभा के प्रारंभ में संतभाईयों द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति को विशिष्ट पालखी पर मंच तक भक्तिभाव के साथ लाया गया।

लंडन से अनुपम मिशन के पू. हिंमतस्वामीजी ने कहा कि ब्र.स्व. योगीजी महाराज अक्षरपुरुषोत्तम का प्रत्यक्ष स्वरुप है ये बात सभीके अंतर में गुरुहरि काकाजी महाराजने दृढ करवाई। वे निर्दोषबुद्धि के राजा थे। उन्होंने जैसे अपने गुरु के प्रति निर्दोषबुद्धि रखी, वैसे हमें हमारे गुरु के प्रति निर्दोषबुद्धि रखकर सेवा कर लेनी है। काकाजी का ऋण हम अदा कर ही नहीं सकते। इग्लेंड की धरती पर जहाँ अभी अनुपम मिशन तैयार हुआ है। शुरुआत में जब ये जमीन लेनेवाले थे तब बहुत तकलीफें आई थी। तब काकाजी अमेरिका पधारे थे और वहाँ से वे लंडन पधारे। तब उन्होंने यह जमीन ले लेने की आज्ञा की थी। उनके आशीर्वाद से यहाँ बडा मंदिर खडा हो गया। आज जो भी कार्य हो रहे है सभी में वे ही काम करे रहे है ऐसा महसूस होता है। तो हम संप-सुहृदभाव-एकता से जीवन जीते हो जाये वही प्रार्थना।

उसके बाद लंडन के प.भ. अशोकभाई- भावनाबहन, प.भ. लीलाधरभाई-शारदाबहन, प.भ. वत्सलभाई, प.भ. कुणालभाई-बीनाबहन कामदारने काकाजी का माहात्म्यदर्शन कराया।

प्रासंगिक उद्‌बोधन में **पू. मननभाई ने** कहा कि बचपन से ही हमें सत्संग का जोग मिला। पूरे गुणातीत समाज में संतों, संतभाईयों, संतबहनों, हरिभक्तों का काकाजी के साथ अनोखा संबंध है। गुणातीतानंदस्वामी को Servant Leadership के सबसे उत्तम आदर्श कहा जाता है। वह बात

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 3 09-08-2024 18:38:34

काकाजीने कैसे अपने जीवन से हमें सीखाया और आज हम कैसे उसे लागु करें उसके मैं कुछ बात बताता हूँ। **(1) Empower others -** सामनेवाले को कैसे सशक्त बनाना, उसको प्रोत्साहित करना ताकि वो सेवा में जुड सके। काकाजीने हमेशा सभीको स्वावलंबी बनाकर आध्यात्मिकता में जोडा है। **(2) Serve a higher perpose -** खुद को ऊपर उठकर देखने की भावना वो काकाजीने जाग्रत की। **(3) Modeled the way -** सभीको खुद के जीवन से सही रास्ता दिखाया। **(4) Care for others -** दूसरों की सँभाल रखना। ऐसे आज के युवाओं यह सारी बातें जीवन में उतारेंगे तो बहुत बदलाव खुद के जीवन में ला सकते है।

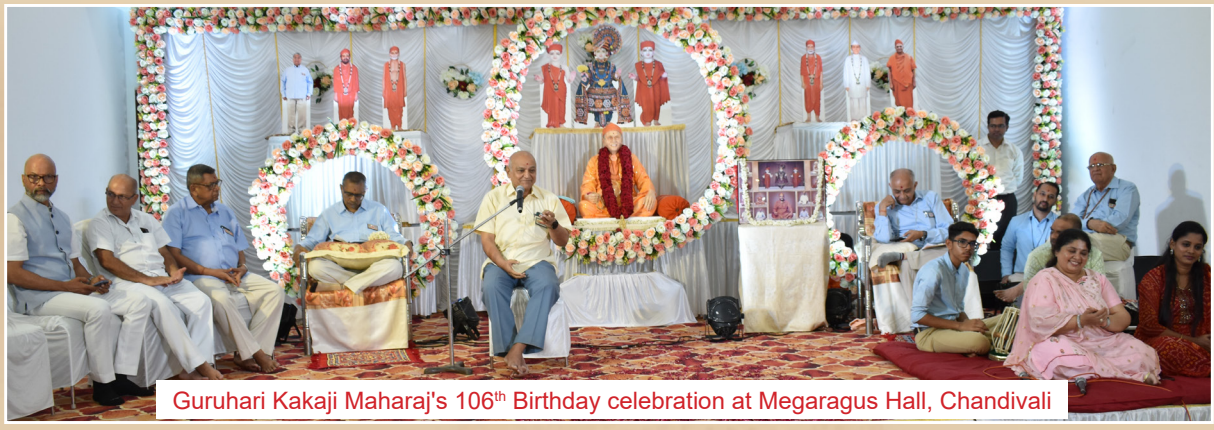

Guruhari Kakaji Maharaj's 106th Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

पू. पाथेयभाई ने (हरिधाम) कहा कि जगत में लोग भगवान की प्राप्ति के लिये चारधाम यात्रा, काशी-अयोध्या, वैष्णवदेवी जैसी यात्रा करने जाते है। वहाँ सभी व्यवस्था खुद करनी पडती है। हमारे यहाँ उलटा है। यहाँ भक्तों की महिमा के साथ सेवा की जाती है। गुणातीतानंदस्वामीने अपनी बात में कहा है कि गुरु जब १६ आना बराबर जीवन जीता है तो शिष्य ४ आना जीता है। काकाजी कहते थे कि महादेव, रामचंद्रजी, माताजीवाले सभी आओ। वे कभी भी किसीमें भेदभाव नहीं करते थे। हमने कोई साधना नहीं की है, ऐसे गुणातीत स्वरुपोंने खुद सहन करके हमें सुखी किया है। पवई के संतभाईयोंने काकाजी को पहचान कर उन्हें राजी कर लिया। हमको उनमें काकाजी के दर्शन करने है, लेकिन वे हमारे में काकाजी को देखते है। हमें केवल जाग्रत रहना है। काकाजी-पप्पाजी-स्वामीजी बहुत समर्थ पुरुष थे फिर भी सभीके दास का दास बनकर रहे। अक्षरधाम का सुख लेना यानि मरके जीने की बात है। उन्होंने हमें सिखाया कि संबंधवाला यानि सिर का ताज। हम बहुत नसीबदार है ऐसे प्रगट स्वरुपों की भेट मिली है। श्रीकृष्ण भगवानने गोर्वधन पर्वत अपनी छोटी ऊँगली से उठाया तो उसमें जिसने उनको टेका दिया वो गोपीजन कहलाये। उसी प्रकार पवई के ये संतभाईयों जो भी कार्य कर रहे है उसमें हमें केवल उनको सहकार देना है। हमें अशक्य को शक्य करने की Technique काकाजीने सीखाई है। तो हम दास का दास बनकर सभी की सेवा करें वही प्रार्थना।

इस अवसर पर चांदिवली के MLA श्री. दिलीपभाई लान्डेजी पधारे थे। सभी संतभाईयोंने उनका शाल और पुष्पगुच्छ द्वारा अभिवादन भी किया।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 4 09-08-2024 18:38:45

प.पू. वशीभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी कहते थे कि आप अंतर की आंखो से देखो। निष्कुणानंदस्वामीने लिखा है कि 'तमे अंतरनी आंखे ओळखो, करो सद्गुरु संतनो संग...' अंतर की दृष्टि से आप संत को पहचानो। काकाजी यानि Visionary पुरुष। भविष्य में क्या होनेवाला है वह वे

देख सकते थे। अक्षरसहित पुरुषोत्तम की बात शास्त्रीजी महाराजने हमें सीखाई और काकाजीने भक्त में भगवान को देखना यानि मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की बात सीखाई। गुरु के वचन से हम जो भी कार्य करेंगे तो हमारा काम सरल हो जायेगा। ११ साल की उम्र में काकाजीने शास्त्रीजी महाराज को कहा कि **'मैं मरने आया हूँ।'** परिस्थिति का सामने से स्वीकार करना वो काकाजीने खुद जीवन जीकर सीखाया। काकाजी को साक्षात्कार हुआ उससे पूरे गुणातीत समाज का सर्जन हुआ। आज भी जगत में महिलाओं को बडी पदवी नहीं देते है, ऐसे समय में सन् १९७२ में काकाजीने बहनों को भगवान भजने का कार्य हाथ में लिया।

सन् १९६६ में स्वतंत्र हुए और १ जून को गुणातीत समाज की स्थापना हुई और संतबहनों भगवान भजे ऐसा स्थान तैयार हुआ। उसीके साथ योगीबापा की आज्ञा से पढे-लिखे कर्मयोगी साधु तैयार करने के कार्य में काकाजी जुड गये। तो हे काकाजी! आपके सिद्धांत के मुताबिक हम जीवन जीये और केवल आपको राजी कर ले वही प्रार्थना।

उसके बाद प.भ. उषाबहन खंडेलवालने गुरुहरि काकाजी महाराज के चरणों में भजन द्वारा अपनी प्रार्थना रखी।

हरिधाम से प.पू. दासस्वामीजी ने कहा कि पूरे स्वामिनारायण संप्रदाय में बडी क्रांति लानेवाले और योगीजी महाराज की सच्ची पहचान करवानेवाले स्वरुप ऐसे गुरुहरि काकाजी महाराज का हम प्रागट्यपर्व मना रहे है। शुरुआत में हम तारदेव मंदिर हररोज जाते थे। काकाजी, पप्पाजी और सोनाबा वहाँ होते ही थे। जब भी काकाजी वहाँ होते तो वे एक भजन गवाते कि 'लीला जोई तारी, बुद्धि जाय हारी...' मैं अपनेआप को बहुत भाग्यशाली मानता हूँ कि संस्कृत की पढाई के निमित्त मुझे बहुत सालों तक तारदेव में रहने का मौका मिला। पवई के संतभाईयों को मैं मेरा आत्मीय बंधु मानता हूँ। रात्रि की प्रायश्चितरुप प्रार्थना कैसे करनी वह काकाजीने मुझे सीखाया। वचनामृत ग्रंथ और स्वामी की बातों का अद्भुत रहस्य भी काकाजी के मुख से सुनने मिला।

एकबार तारदेव में टेलिफोन की बाजु की रुम में मैं और गुरुजी (दिल्ली) संस्कृत की पढाई कर रहे थे। हमारे संस्कृत के गुरु देर से आनेवाले थे, तब काकाजी एकदम आये और बोले कि चलो, आज मैं तुमको पढाता हूँ। फिर उन्होंने हमें पूछा कि क्या आप काकाजी को पहचानते हो? हमने कोई उत्तर नहीं दिया। तो वे खुद ही बोलने लगे कि **काकाजी यानि मैत्रीभाव, काकाजी यानि सुहृदभाव, काकाजी यानि स्नेहलभाव, काकाजी यानि निर्दोषबुद्धि के राजा।** इस प्रकार खुद के आध्यात्मिक व्यक्तित्व की पहचान करवाई। तब हमने उनको प्रार्थना की कि आपकी ऐसी सच्ची पहचान हमें हो जाये और उसकी प्रतीति हमेशा रहे ऐसी आप कृपा करना। साधु बनकर मुझे ६० साल होने आये, लेकिन गुजराती और अंग्रेजी बोलने में और लिखने में काकाजी

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 5 09-08-2024 18:38:58

Guruhari Kakaji Maharaj's 106th Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

जैसे माहिर पुरुष आज तक मैंने नहीं देखे। ब्रह्मविद्या के रहस्य की चाबी का भंडार उनके पास था। ऐसे गुणातीत स्वरुप के प्रसंग को याद करते है तो हमारा अंतर गद्‌गद् हो ही जाता है। उनका ऋण हम अदा कर ही नहीं सकते। काकाजी के जाने के बाद भरतभाई, वशीभाई और अन्य योगेश्वरोने काकाजी को जीवंत रखा है। वे सभी काकाजी के प्रसन्नता के पात्र है। अभी पवई मंदिर में बहुत बडा कार्य होने जा रहा है। सभी स्वरुपों का सिद्धांत एक ही है कि संप-सुहृदभाव-एकता रखना, निर्दोषबुद्धि से सेवा करना, दास का दास बनकर रहना। तो काकाजी को अंतर में हाश हो जाये ऐसा हम जीवन जीये वही प्रार्थना।

उसके बाद प.पू. माधुरीबहन और पू. जयश्रीबहनने गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति को विशिष्ट हार अर्पण किया।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि एकबार तारदेव मंदिर में गुरुहरि काकाजीने राजुभाई भट्ट को पूछा था कि मैंने आपको कुछ भी नहीं दिया, कोई आश्रम भी बनाया नहीं, तो आपको कुछ लगता नहीं है? तो राजुभाईने कहा कि काकाजी, आप हमको मिल गये तो सबकुछ मिल गया। काकाजी हमेशा कहते थे कि आपके हृदय में भगवान पधराना यह हमारा काम है और आप मेरे साथ भजन करते हो तो प्रभु का सुख मिल जायेगा, लेकिन बाकी अन्य कोई ईच्छा रखेंगे तो नहीं मिलेगा। मुझे उन्होंने कहा था कि **जब आपको ९९ रुपये कि जरुरत होगी तो १०० रुपये मिल जायेंगे। जैसे जरुरत होगा ऐसे काम हो जायेगा और ऐसे ही अनुभव हमें आज तक होते रहे है।**

कुछ दिन पहले डॉ. महेन्द्रभाई मर्चन्ट दादर मंदिर गये थे। वहाँ उन्होंने योगीजी महाराज के पत्र की पुस्तक खरीदी। वो पुस्तक

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 6 09-08-2024 18:39:12

खोली तो उसमें ४० नंबर के पन्ने पर योगीबापाने लिखा है कि **'पवई में बहुत बडा केन्द्र बननेवाला है, जिसमें संस्कृत पाठशाला और योगा का केन्द्र भी होगा।'** जो हम आज पवई मंदिर में नूतनीकरण करने जा रहे है वो सचमुच ऐसे स्वरुपों तथा काकाजी के आशीर्वाद से साकार होने जा रहा है। हम तो केवल निमित्त बने है। हमें केवल उनकी स्मृति में डूबे रहना है। काकाजी को सभी दादुकाका नहीं, लेकिन जादुकाका कहते थे। सचमुच काकाजी जहाँ भी पधारते वहाँ का माहौल पूरा बदल जाता था। कई भक्तों को बडी से बडी तकलीफ में काकाजीने सरल उपाय बताकर उनको बहुत सहाय की। वे ऐसे सत्पुरुष थे जो अशक्य को शक्य कर देते थे। वे Authentic पुरुष थे। वे आध्यात्मिकता में बहुत आगे थे। वे सबसे ज्यादा व्यस्त होते थे फिर भी धुन-भजन-कथावार्ता के लिये समय निकाल ही लेते थे। पप्पाजीने में भी लिखा है कि जो काम भजन से होता है वो अन्य किसी साधन से नहीं हो सकता। वैसे काकाजीने हमें हमेशा सिखाया कि हरपल भजन का सहारा लो। अभी मैं सभीको यहीं कहता हूँ कि इस पवई मंदिर के Project के लिये अगर आपसे कोई सेवा नहीं हो पा रही तो ११ माला तो अवश्य फिराना। काकाजी बहुत ही दयालु स्वरुप थे। तारदेव मंदिर में नीचे चना बेचनेवाला फेरिया आता तो उसको भी वे ऊपर बुलाते और वो खरीदकर ठाकोरजी को अर्पण करके प्रार्थना करते कि जो इस चने को खाये उसको निर्गुण बना देना। हमें केवल उनका संबंध हुआ वही सबसे बडा भाग्य है। उन्होंने हमें सबकुछ दिया है। तो कभी अपने पास कुछ कम है ऐसा बिलकुल मत समझना यही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि सन् १९७३ में गुरुहरि काकाजी संतभगवंत साहेबजी और हर्षदभाई भट्ट लंडन आये थे। वहाँ से अमरिका में न्यूयोर्क में आये थे। फिर वे ७ जुलाई को शिकागो प.भ. हसमुखभाई - प.भ. चंद्रिकाबहन के घर पधारे थे तब प्रथम बार उनके दर्शन होते ही मुझे **Love at first sight** हो गया था। उस समय मेरे मन में ऐसा भाव हुआ कि आज शनिवार है और कल रविवार की छुट्टी है तो काकाजी हमारे घर Elkhart-Indiana पधारे। जो करीब शिकागो से देढसो माईल की दूरी पर था। काकाजी अंतर्यामी रुप से मेरे पास आये और कहा कि कल हमें शिकागो से अमरिका में दूसरे भक्तों को मिलने जाना है। तो इस समय आपके घर आना शक्य नहीं है। मगर हम अगलीबार जब वापस आयेंगे तब आपके घर जरुर आयेंगे। तो मैंने प्रेम से हाँ बोला। फिर मैं घर पर गया और दूसरे ही दिन मुझे अचानक से पेट में Aapendix का दर्द शुरु हो गया। करीब ६ दिन के बाद मेरा Aapendix का Operation हुआ। करीब तीन हफ्तें बाद काकाजी को मेरे Operation के बारे में पता चला और वे साहेबजी, हर्षदभाई के साथ न्यूयोर्क से Elkhart आये। वैसे तो काकाजी की दूसरी धर्मयात्रा चार साल बाद सन् १९७७ में होनेवाली थी, लेकिन चार हफ्तें में ही अगस्त, १९७३ में वे हमारे घर पधारे। फिर सन् १९८१ में महाराज की द्विशताब्दी का महोत्सव था, तो काकाजी उनकी मूर्ति लेकर वॉकिगन मंदिर आये थे और मूर्तिप्रतिष्ठा भी की। वहाँ उन्होंने मूर्ति के आगे प्रार्थना की थी कि **जो यहाँ २० मिनट धुन करेगा उसका काम हो जायेगा।** आज भी सभीको उसका अनुभव सहज हो रहा है। काकाजीने हरपल हमारी बहुत रक्षा की है। सन् १९८७ में अंतिम बार वे आये थे तब हमें आशीर्वाद दिया कि आपकी मेनेजर की पोस्ट में ओर ५ साल बढाकर देते है। तो ऐसे करीब ४० साल Abbott Laboratory मैंने नौकरी की। उसके बाद वे स्वधाम चले गये। फिर महेन्द्रबापु यहाँ आये तो सत्संग ज्यादा बढा। तो हे काकाजी! हम ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति करते रहे और Qualityवाला सत्संग करें वही प्रार्थना।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 7 09-08-2024 18:39:13

गुरुहरि काकाजी महाराज के Audio द्वारा आशीर्वाद प्राप्त हुए। उन्होंने कहा कि निष्ठा की बात में शास्त्रीजी महाराजने किसीकी महोबत नहीं रखी थी। निष्ठा में तनिक भी फर्क होगा तो पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारी, साहेब जैसे बडेपुरुषों को बहुत महेनत करना पडेगा। इसलिये मेरी बात पसंद पडे तो ग्रहण करना, नहीं तो खुशी से मुझे वापस करना, मुझे कोई हरजा नहीं है। सभी शास्त्र का दोहन वचनामृत है, लेकिन वचनामृत का भी भाष्य गुणातीतानंदस्वामी की बातें है। एक छोटी सी बात में समझो - वच.ग.प्र. ५ - राधासहित कृष्ण का ध्यान करो। ये कृपावाक्य है। ये महाराजने बहुत स्पष्ट बात बताया। ऐसा कोई क्रांतिकारी, गणितशास्त्री Euclid से भी पार ऐसा महाराज को पूरा नहीं पहचान सका होगा। अभी तत्त्वज्ञान की पूर्णाहुति करनेवाली ये शिबिर है। खुल्ला रहना। आप सचमुच एकांतिक हो, जो ये सभा में आ सकते हो या कोई पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब को मानते हो वो सब एकांतिक है। मैं कोई भी बात वचनामृत और स्वामी की बातों के आधार सिवाय नहीं करुँगा और नहीं करता हूँ। लेकिन गुणातीत उपनिषद के बारे में शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराजने, स्वयं सिद्धपुरुषोंने, परम सिद्धपुरुषोंने बताया है। वही बात पप्पाजीने आज लिखा कि Practice भी Perfect चाहिए। Beginning is the end. First step is the last step. हम कोई चक्कर में पड गये है।

आपको कोई शंका हो कि एकांतिक हो आप सब? तो मैं संक्षिप्त में ये बात बताता हूँ। आप आपके एकांतिक को पूछ लेना। तो उसका वच.ग.प्र. १५, प्र. ५८ और म. ९ है। कल कोई एक लडका भाषण करते समय बोला कि हरिप्रसादस्वामीने बात किया। तो २०० साल पहले स्वामी की बात अपन करते-करते, उसमें रहते-रहते प्रत्यक्ष में आ गये। वो ७ साल का लडका भी समझता है। तो जो बचनामृत बताया उस हिसाब से प्रत्यक्ष को मानो तो ऐसा हो जायेगा। उसको हैया में चोट लग गई। जो २०-२० साल से संत लोग थे, सिद्ध लोग थे, साधु लोग थे, लेकिन चित्त के पार नहीं गये थे। तो चित्त के पार जो चेतना है, वो चेतना में एक छाप पड गई। भगवदी दो प्रकार का होगा, स्वभाववाला होगा, एक स्वभाव से रहित। पहला प्रकरण की १९०/२५९वी बात और १३वें प्रकरण की १०४ बात कि जिसकी इन्द्रियाँ-अंत:करण काबु में है और भगवान के ध्यान में ही रहता हो, जरुरत के सिवाय दूसरी क्रिया नहीं करते और सच्चा भगवदी जाणपणारुप दरवाजे रहता है और गुण के प्रभाव में कभी भी आता नहीं है। कोई हमें बोले कि गधा है, बुद्धु है, राजा है, बहनों को बोले - गांडी, तो हम तुरंत बोलेंगे तेरी माँ गांडी। ये वेश्या, ये भूतनी, ये डोकरी। वो हँसेगा। तो ये जानवर हँसता है। He is a mad man. आप बीमार है, बहुत बीमार है, उसको Last stageवाला Cancer है। तो उसको समझ नहीं है। योगीबापा को अपन नहीं पहचान सका, वो सत्य है। बापा, तो आप कृपा करो। कृपा में आपका दोष दिख सकेगा, लेकिन टाल नहीं सकेगा। लेकिन मैं अनुग्रह करता हूँ। जाओ, मफत में बख्शिश। बख्शिश का मूल्य होता नहीं। क्या बख्शिश दिया? लडका-लडकी दिया, राजपाट दिया। लो, जो जिसको चाहता था दे दिया। हमको थोडा पैसा चाहिए था तो हमने २ लाख मांगा। नहीं तो मैं बोम्बे नहीं रहनेवाला था। शास्त्रीजी महाराज बोले कि भीख मांगता है तो २ क्यूँ मांगता है, ५ मांग। उन्होंने लाखों रुपया दिया। कमाया भी, गवाया भी और

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 8 09-08-2024 18:39:16

एक अनुभव सीख लिया। इसका प्रतीकरुप पप्पाजीने Agri Orient Company में निर्दोषबुद्धि रखी। वह बहुत कठिन बात थी। लेकिन पूर्व का महामुक्त जो होता है, स्वरुप जो होता है वैसा हमारा एक समाज Stage पर जो बैठा है। इधर आनेवाले सब दरवाजे में अपना मन छोडकर यानि खुद को मारकर आना। क्या मरने का? ये गुणातीत ज्ञान हम किसको करें? बीमार आदमी को? Last stage पर Mad आदमी को? अंधा आदमी को हम बात कैसे करें? इसलिये जरा जोरदार मेरे को बोलना पडा। पप्पाजी बोलता है कि ये लोग मांगता नहीं है, तो तुम क्यूँ देता है? ये बात जो सुनेगा वही पात्र, वही वर्तन, दूसरा कोई पात्र नहीं है। ये बात सुनने में और हजम करने में जरा तकलीफ होगी। उसकी भी गोली हम स्वामीजी, पप्पाजी, काकाजी देंगे। वो शताब्दी के पहले एक Process पूरा करना है। अभी इसके लिये गृही त्यागी का कोई मेल नहीं है। उसकी समझ के लिये वच.वर. १९ और २० पढना। ऐसा पप्पाजी-स्वामीजी को पूछ लेना। हमारे दिनकरभाई व्यवहार में इतना बडा ऑफिसर और फिर भी सब नियमानुसार वर्तन करता है। छोटी लडकी का भी स्पर्श हो जाये तो उपवास करता है। स्वामीजीने बोला कि वो Born Saint (जन्मजात साधु) है। ऐसा हमारा रतिभाई, पूनमभाई भी है। उनको लडके-लडकी भी है। फिर भी सारा संसार दिव्य बन गया। Science and Religion, Einstein और सब बोलते है कि Mind can become divine. उसके बारे में एक Conference भी हो रहा है। वो बात आप लोग के समझमें आये, न आये लेकिन एक सीधी बात समझ लेना कि मैं आपका हूँ। ये कुछ मेरे से बननेवाला नहीं है। लेकिन स्वामीजी-पप्पाजी मैं आपका हूँ। तो हम थोडी परीक्षा तो करेंगे कि तेरी पत्नी का है, तेरे लडके का है, थोडा तीसरा है। किसीको Minister होना है। हमारा नंबर सातवाँ लगता है। तो कैसे काम बनेगा? उसके आशीर्वाद में कुछ गलती नहीं है।

गुरुहरि पप्पाजी महाराजने Audio द्वारा आशीष देते हुए कहा कि काकाजी यानि बहुत शूरवीर, दिव्य और Dynamic Personality. संकल्प सिद्ध पुरुष थे। केवल शास्त्रीजी महाराज की मूर्ति धारकर संकल्प कर लेते थे। योगीबापा की प्रसन्नता उन पर हुई। योगीबापा, काकाजी, सोनाबाने मिलकर गुणातीत समाज का सर्जन करने का संकल्प किया। काकाजी और सोनाबाने योगीबापा की पहचान करवाई। शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज सामान्य साधु लगते थे। एकांतिकपना सिद्ध कराके कार्य काकाजीने हाथ में लिया और आत्मा के शुद्धिकरण की प्रक्रिया सन् १९५२ से शुरु हुई। काकाजी को साक्षात्कार हुआ और सबसे पहले उन्होंने यही कहा कि अक्षरधाम का मैंने दर्शन किया है। वहाँ जो महाराज विराजमान है वही यहाँ योगीबापा के रुप में है और जैसा आप उनको मानोगे तो ऐसा हो जाओगे। लक्ष्मीनारायण मानो, नरनारायण मानो, अक्षररुप मानो या पुरुषोत्तमरुप मानो। जैसे मानोगे वैसा दर्शन होगा। योगीबापा काकाजी को अपने साथ सभी जगह लेकर जाते थे। आज हम देखते है योगीबापा का ऐसा गुणातीत समाज कितना विकसित हो रहा है। योगीबापाने बहनों का कार्य शुरु किया। मैं योगीबापा को मिलने गोंडल गया था। उनको कहा कि ज्योतिबहन और ताराबहन का काम हो जाये। मैं उनके लिये शादी करने के लिये अच्छा पति मिल जाये वो मांगने गया था तो बापाने वो बात की ही नहीं और बापा बोले कि भगवान भजे तो क्या गलत है? शादी करके करना भी क्या है? युवान वय में भगवान भजने का उस समय कोई तरीका था ही नहीं। वडताल में सांख्ययोगीबाई के रुप में भगवान भजती है। पहलीबार ऐसे एकांतिक साधु बनने की रीत बापाने शुरु की।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 9 09-08-2024 18:39:16

Guruhari Kakaji Maharaj's 106th Birthday celebration at Megaragus Hall, Chandivali

प.पू. गुरुजी (दिल्ली), ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी के आशीर्वाद भी Audio द्वारा प्राप्त हुए।

इसी प्रकार गुणातीत समाज के अन्य सभी केन्द्रो में भी गुरुहरि काकाजी महाराज का प्रागट्यपर्व भक्तिभाव और आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

Guruhari Kakaji Maharaj's 106th Birthday celebration

In Australia

In UK

In Chicago

In Rumla-Gholar

❊ सोमवार, दि. १० से शुक्रवार, दि. १४ दौरान प.पू. भरतभाई, पू. राजुभाई, पू. हर्षितभाई लाड और प.भ. घनश्यामभाई कोठारी माणावदर मंदिर के हीरक पाटोत्सव तथा गुरुहरि काकाजी महाराज के १०६वें प्रागट्य महोत्सव में सहभागी होने खास पधारे थे। संतभगवंत साहेबजी, प.पू. अश्विनभाई और संतभाईयों के दिव्य सान्निध्य में तीन दिन का आयोजन हुआ था।

दि. १० को राजकोट में प.भ. गणेशभाई के घर भोजन करके सभी संतभगवंत साहेबजी की स्वागत यात्रा में माणावदर गये। स्वागत यात्रा के बाद सायं स्वागत सभा हुई। तीनों दिन ६० साल का इतिहास, भक्तों का योगदान और वहाँ रहते हुए साधक भाईओं दिनुभाई, हरेशभाई जैसे हरिभक्तों की साधनामार्ग की

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 10 09-08-2024 18:39:22

Manavadar Patotsav celebration

गाथा भी सुनने को मिली। पू. अरुणभाई, पू. व्यासबापा और पू. रणछोडभाई की भी बहुत स्मृति भक्तोंने करवाई। माणावदर का इतिहास अश्विनभाईने बहुत ही रसदायक शब्दों में सुनाया।

भरतभाईने काकाजी का माहात्म्यदर्शन कईं दिव्य प्रसंगो की स्मृति के साथ कराया। साहेबजी का अद्भुत आशीर्वाद उनकी माहात्म्यसभर वाणी द्वारा प्राप्त हुआ। अद्भुत स्मृति और आशीर्वाद मिले।

At BAPS Temple, Gondal

दि. ११ को जुनागढ में प.भ. मधुभाई और प.भ. शांतिलालभाई चपला के घर पधरामणी की और योगीबापा, काकाजी-पप्पाजी के दिव्य स्मृति प्रसंगो को याद करके आनंद किया।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 11 09-08-2024 18:39:23

At Kanjibhai's home, Junagadh

At Mehulbhai's home, Rajkot

With P. Vijayprakashswamiji at Shridham

At Apekshaben and Bansariben's home, Jetpur

दि. १२ को आणंदबापा के पुत्र प.भ. कानजीभाई के घर आये थे। धुन-भजन करके प्रार्थना की थी। उसी दिन श्रीधाम गुरुकुल जालनसर, धोराजी गये थे। वहाँ पू. विजयप्रकाशस्वामीजी से मुलाकात हुई। योगी डिवाईन सोसायटी की ओर से श्रीधाम गुरुकुल के छात्रों को स्कूल के बच्चों को बेग वितरण किया।

वहाँ से स्वामिनारायण गादीस्थान जेतपुर आये। प.भ. अपेक्षाबहन-प.भ. बंसरीबहन के घर पधरामणी विजयप्रकाशस्वामीजी के साथ की। प्रसादीभूत मंदिर के दर्शन करके राजकोट योगीधाम पहुँचे।

दि. १३ को राजकोट के कांटा बगैर की बोरडी के मंदिर में दर्शन करके प.भ. मेहुलभाई-बिंदियाबहन के घर आये। धुन-भजन-सत्संग करने के बाद उनके भाई देवांगभाई-प.भ. प्रीतिबहन के घर भोजन लिया। फिर वापस योगीधाम आये।

प.भ. निर्मलभाई के संबंधी के घर भी गये और शाम को भरतभाई के भाई प.भ. हिरेनभाई (शारदामासी के लडके) के घर बहुत सारे संबंधी के सान्निध्य में सत्संग सभा की और धुन-भजन भी किया और रात्रि भोजन भी वहाँ ही लिया।

रात को योगीधाम आराम करके दूसरे दिन दि. १४ की सुबह वापस मुंबई लौटे।

At Devangbhai's home, Rajkot

At Hirenbhai's home, Rajkot

*** सोमवार, दि. ९ से दि. १३ जून दौरान प.पू. वशीभाई और पू. अश्विनभाई गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रागट्यपर्व तथा सहृदयी पुस्तक के पारायण निमित्त दिल्ली पधारे थे। एक मास के काकाजी की स्मृति में इस अनुष्ठान शिबिर की पूर्णाहुति में भी हिस्सा लिया।**

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 12 09-08-2024 18:39:23

❊ शुक्रवार, दि. १४ से रविवार, दि. १६ जून दौरान सुबह-सायं देश-विदेश के युवाओं के लिये विशिष्ट Online शिबिर का आयोजन हुआ। इस शिबिर में करीब २५० युवक-युवतीओंने लाभ लिया।

At Delhi

प्रथम दिन संतभाईयों, संतबहनों द्वारा दीपप्रागट्य के साथ इस शिबिर का आरंभ हुआ।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी थे तब लोनावाला, पंचगनी, गणेशपुरी जैसे कई स्थानों में हमारी शिबिर होती थी। इस शिबिर का मुख्य हेतु आगे जो बदलाव आनेवाले है उसके मुताबिक

Youth Shibir at "Akshardham" Temple, Powai

स्वयं में बदलाव लाना। वास्तविकता का स्वीकार करके हमें बडा सोचना है। आज की युवा पेढी भविष्य के लिये तैयार हो जाय वह है। अभी हम यहाँ जो नूतनीकरण का कार्य कर रहे है वो हमारा Vision है, तो उसमें हमें Change agent बनना है। तो सभी तैयार हो जाना। ये शिबिर एक परीक्षा के रुप में रखी गई है। जो भी विषय जिसको भी मिले है उसपे Presentation बनाना, उसे आज की परिस्थिति के साथ जोडना। हरिप्रसादस्वामीजीने कहा था कि काकाजी का सबसे बडा योगदान तो वह युवा मंडल का गठन

और युवा प्रवृत्ति का कार्यक्रम है। जो योगीजी महाराजने सीखाया। हमें हमारा आलसीपना, खुद की सुविधाएँ वह छोडनी है। हमको पता नहीं है हम क्या कुछ कर सकते है। हमारा मन-बुद्धि-चित्त इस शिबिर में उत्साह से लगा देना है। कुछ भी कार्य करेंगे तो प्रसंग तो बनेंगे ही, उसमें हमें हमारा योगदान अच्छे से देना है। यह शिबिर का मुख्य हेतु यह है कि अगले ४-५ साल में मंदिर की हरेक प्रवृत्तियों होगी उसमें हिलमिलकर उसे ज्यादा विकसित करना है। तो हम उसमें जुड पाये वही प्रार्थना।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 13 09-08-2024 18:39:28

अनुपम मिशन से प.पू. अश्विनभाई ने कहा कि भरतभाई, वशीभाई और अन्य संतभाईयों की हाजरी में युवाओं की यह शिबिर होने जा रही है यह देखकर बहुत आनंद हो रहा है। 'मेरे गुरु राजी हो' वह बात हमें केन्द्र में रखनी है। 'हम किसके है?' वो केफ गुरुहरि काकाजी महाराज को था। वैसा केफ हमें होना चाहिए। सभी हमें पवई के युवा के रुप में पहचानते है, लेकिन हम काकाजी के सेवक है तो उनकी गरिमा का मान हम रख सके ऐसा हमारा वर्तन होना चाहिए। तो हमारे विचार-वाणी-वर्तन से हमारे गुरु का नाम हम रोशन कर सके ऐसा जीवन हमें जीना है। शांतिभाईने जो सूत्र दिया था उसके मुताबिक '**प्रभु का कार्य, प्रभु की रीत से और केवल प्रभु की प्रसन्नता के लिये**' ही कार्य करना वही हमारी गुरुभक्ति है। मैं भगवान का और भगवान मेरे और वो राजी हो ऐसे हमें जीवन जीना है। ऐसा हम कर सके उसके लिये प्रभु हमें बल-बुद्धि दे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि जो अपने गुरु को राजी करने के लिये जीवन जीये, अपने निर्णय तथा लक्ष्य को पूर्ण करने के लिये मर मिटे वही सच्चा युवा है। वशीभाईने तीन बात बताई - **(1) Be a Change Agent. (2) Nothing is Impossible. (3) Be responsible.** ये तीन बात पर हमारी यह शिबिर होने जा रही है। इस शिबिर में शिबिरार्थीओं में करीब १७ ग्रुप को १० विषय दिये है। गुरुहरि काकाजी शिबिर लेते और दूसरे दिन परीक्षा लेते थे। वे खुद ही पेपर तैयार करते थे। वो कहते थे कि मेरी परीक्षा खुल्ली किताब की तरह है। किताब खुल्ली रखकर भी आप परीक्षा दे सकते है। लेकिन हमको पता नहीं होता था कि इस सवाल का जवाब पुस्तक में कहाँ है। इसलिये ज्ञान बहुत जरुरी है। इसलिये हमने जो विषय लिये है उसमें वचनामृत और अन्य ग्रंथो को भी लिया है। सभी इस शिबिर में एकाग्र होकर बैठना। हमारे स्वामिनारायण संप्रदाय में बदलाव आते ही रहता है। गुणातीतानंदस्वामी के

Youth Shibir at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 14 09-08-2024 18:39:42

Youth Shibir at "Akshardham" Temple, Powai

समय में छावणी के रुप में शिबिर होती थी। उसमें महाराज की सर्वो परीता की बातें होती थी। शास्त्रीजी महाराज पारायण बहुत करते है। योगीजी महाराज विचरण के रुप में शिबिर करते थे। जो युवक उनकी सेवा में रहता उसकी शिबिर शुरु हो जाती थी। फिर गुणातीत समाज की स्थापना हुई और गुणातीत स्वरुपों द्वारा शिबिर का आरंभ हुआ। अब कोरोना के बाद हम Online शिबिर कर रहे है। मैं तीन बात बताता हूँ। **(१)** इस शिबिर द्वारा आप दो जन के साथ मैत्री अवश्य करना। **(२)** हमेशा सभीको धन्यवाद देने का भाव रखना। **(३)** हमेशा दूसरों को मददरुप होना। तो सभी युवाओं को सच्चा मार्ग प्राप्त हो और हर साल ऐसी शिबिर हमारी होती रहे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि सभी युवाओं में एक अलग ही ऊर्जा का दर्शन हो रहा है। अश्विनभाईने जैसे बताया वैसे हमें गुरुमुखी बनना है। इस शिबिर में आध्यात्मिकता में KG से लेकर Ph.D. level के युवाओं जुडे है। 'मैं सब जानता हूँ' ऐसा भाव नहीं रखना है। गुरुहरि काकाजी कहते थे कि हम बडेपुरुष के पास जाये तो खुल्ले होकर जाये। हमें अज्ञानी बनकर जाना है। तो सच्चा ज्ञान प्राप्त कर पायेंगे। ब्रह्मरुप होने के लिये ये शिबिर है। उसमें मुख्य विषय यानि गुणातीत सत्पुरुष। उनका हम जितना स्वीकार करेंगे उतना हमारा मार्ग सरल हो जायेगा। जितना बडेपुरुष में दिव्यभाव रखेंगे उतना आगे बढेंगे। हमें आस्तिकता रखनी है कि कोई ऐसा दिव्य तत्व है जो अशक्य को शक्य करता है। हम किसीको ज्ञान, उम्र या उसकी सुंदरता से उनका मूल्यांकन ना करें, केवल संबंध की दृष्टि से देखे। इस शिबिर से हमें ज्यादा से ज्यादा फल प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना।

बाल शिबिर की तरह ही युवाओं को महापूजा का महत्व समझाने भरतभाई-वशीभाईने प्रत्यक्ष महापूजा भी करवाई। साथ ही काकाजी जो ध्यान तथा प्राणायाम करवाते थे वह भी करवाया।

इस शिबिर में युवाओं को (1) How to be a change agent. (2) YDS as an NGO in next 3 years (3) चौसठ पदी के पद ४१ से ६४ (4) वंदु सहजानंद के पद १ से ८ (5) How can we motivate youths so that satsang/temple become priority in devotees' life (6) What way one can progress in path of Spirituality (7) गुरुहरि काकाजी महाराज का 'स्नेहलसिंधु दयालु प्रभु' भजन (8) Our Spiritual hierarchy (9) How do you engage the potentinal energies of housewives who are not emplyoed but are looking after families (10) Discipline in Satsang, attending Sabha, Home & Office जैसे कई मुद्दे पर युवाओंने बहुत अच्छी जानकारी दी।

पूर्णाहुति में प.पू. वशीभाई ने Way Forward के माध्यम से मंदिर में होनेवाले कार्यक्रम के लिये युवक-युवतीओं को जाग्रत किया।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 15 09-08-2024 18:39:47

Youth Shibir at "Akshardham" Temple, Powai

प.पू. भरतभाई ने कहा कि जो भी शिबिरार्थी इस शिबिर में जुडे है उन्हें अपने-अपने केन्द्र में जाकर प्रत्यक्ष सभा करनी चाहिए। हमें ज्यादा से ज्यादा लोगों को सत्संग से जोडना है। पवई के संतभाईयों आयेंगे तभी ही सब सभा में हाजर रहेंगे ऐसा नहीं करना है। योगीबापा के समय में तो ज्यादा लोग भी नहीं थे। उन्होंने हफ्तें की सभा का प्रारंभ किया। तो इस साप्ताहिक सभा के माध्यम से सभीको एकसाथ जोडकर रखना है। सभा में जायेंगे तो सहज ही सेवा भी मिल ही जायेगी। ज्यादा मंडल नहीं होगा तो चलेगा, लेकिन सभी मंदिर के कार्य के लिये एकदम तैयार हो जाये वह ज्यादा जरुरी है। जो भी बदलाव होता है तो उसका स्वीकार करो। सभीके साथ माहात्म्य की बात करते रहना चाहिए। हमें हमेशा अपनेआप को देखना है। हम दिन में कितनी बार Disturb हो जाते है और उसमें कितने समय के बाद वापस आ जाते है वह अंतर्दृष्टि करनी चाहिए। तो सभीको बहुत धन्यवाद देते है।

दिल्ली से प.पू. गुरुजी ने सभी युवाओं को विशिष्ट आशीर्वाद के साथ शुभकामनाएँ भी दी।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि आज Father's Day के दिन पर शिबिर की पूर्णाहुति हुई। सभीने बहुत अद्भुत बात इस शिबिर में बताई। इस शिबिर का Essence हम हमारी डायरी में लिखे और हररोज याद करें। भरतभाई-वशीभाई को धन्यवाद है कि इस शिबिर का आयोजन किया। गुणातीतानंदस्वामी ऐसी शिबिर हर तीन महिने करते थे। जुनागढ में ब्रह्मरुप होने का अखाडा चलता था। तो वैसे पवई से वह चल रहा है। तो हम ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति करें और बडेपुरुष को राजी करें वही प्रार्थना।

प.भ. हेमंतभाई ने कहा कि इस शिबिर की परिकल्पना के लिये सभीको धन्यवाद देते है। इस शिबिर के माध्यम से सभीको अहेसास हुआ कि हम जहाँ है उससे आगे उठकर आना है। गुरुहरि काकाजी कहते थे कि Well begun is half done. जो भी शिबिर में बताया गया अब केवल उसे पकडकर रखना है। शिबिर के जो विषय थे वह आज के Corporate level से लेकर आध्यात्मिकता के साथ कैसे जोडकर रखना वह अद्भुत था। शिबिर की मुख्य बात थी - शिस्त। तो सामान्य शिस्त यानि सभा में कैसे बैठना, बीच में किसीको न टोके, चालु सभा में कुछ न खायें और सबसे जरुरी बात कि सभा के दौरान मोबाईल का इस्तमाल न करें। हम शिस्त की बात करते है लेकिन बडे सत्पुरुषों को देखेंगे तो समझेगा कि शिस्त कैसे रखनी चाहिए। समय की प्रतिबद्धता हमें रखनी चाहिए। कम से कम समय में हमें हमारी बात रखनी चाहिए। अंत में उन्होंने संभाजी नगर के राजुभाई वाढेर को Online Zoom App की सेवा अच्छे से निभाने के लिये धन्यवाद दिया।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 16 09-08-2024 18:39:49

पू. किशोरभाई मास्टर्स ने कहा कि तीन साल में मंदिर में क्या करना है उसके लिये भरतभाई-वशीभाई सभीको तैयार कर रहे है। आगे जो भी बदलाव आ रहे है उसके लिये हमें सक्षम होना चाहिए। पवई के भाईयों जो भी कार्य कर रहे उसमें हमें जुड जाना है। उससे हमें जो प्राप्ति होगी वह हमें अक्षरधाम तक लेकर जायेगी। चौसठ पदी और वंदु सहजानंद को जिस तरह से युवाओंने समझाया वह बहुत ही अद्भुत था। तो मेरी एक बिनती है कि शिबिर में जो भी Presentation दिखाये उसका Video बनाकर सभी उसका लाभ ले सके ऐसा कुछ करना चाहिए। तो पवई के नूतनीकरण के कार्य में हम जुडे रहे वही प्रार्थना।

पू. माधुरीबहन ने कहा कि चौसठ पदी का विषय जो दिया था उसके बारे में ज्यादा किसीको पता नहीं था। फिर भी सभी के पास से माहिती इकट्ठा करके शिबिरार्थीओंने इसमें भाग लिया। कई नये युवक-युवतीओंने पहलीबार बात की वह देखकर अच्छा लगा। संभाजी नगर के कई भक्तों थे कि जिनको गुजराती नहीं आती थी फिर भी ऐसे शास्त्रों के विषयों पर अच्छा Research करके उसे समझाया। तो जो भी ज्ञान हमें इस शिबिर द्वारा मिला है उसे वर्तन में उतारना है। इस शिबिर में सहज ही सुहृदभाव का दर्शन हुआ। सबका साथ सबका विकास यह बात देखने मिली। तो ऐसा शिस्त हमारे वर्तन बने वही प्रार्थना।

पू. अश्विनभाई (पवई) ने भरतभाई-वशीभाईने युवाओं के लिये जो किया है उसके लिये उनको धन्यवाद दिया।

अंत में एक भेट के रुप में सभी मंडल के युवाओं को Robert Greene की **"48 Laws of Power" पुस्तक दी गई।**

"48 Laws of Power" Book given to Youths in Shibir

*** शुक्रवार,दि. २१ जून को १०वे आंतरराष्ट्रीय योग दिन का कार्यक्रम Megarugas Hall में प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.भ.डॉ दीपकभाई परमार तथा उनके द्वारा तैयार किये गये अन्य योग शिक्षक, जलाजा फाउन्डेशन के ट्रस्टी श्री. जे.पी. शेट्टीजी, भाजपा के श्री. सीताराम तिवारीजी, Public Prosecutor पद्मश्री उज्जवल निकमजी की हाजरी में दीपप्रागट्य के साथ हुआ।**

International Yoga Day celebration at Megaragus Hall, Chandivali

Yoga for self and society इस विषय द्वारा इस योग सत्र का आयोजन किया गया था।

साथ ही पवई मंदिर के नूतनीकरण के कार्य में Yoga का विशिष्ट Classes समाविष्ट किया गया है उसकी जानकारी भरतभाई और वशीभाईने दी और आशीर्वाद भी दिये।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 17 09-08-2024 18:39:53

International Yoga Day celebration at Megaragus Hall, Chandivali

उसके बाद सभीको **Blood Pressure, Weight Management, Stress Management, Children, Senior Citizen, Pre-Post Pregnancy** जैसे कई बातों पर दिपकभाईने अच्छी माहिती दी। फिर योगशिक्षकोंने अलग अलग योग के आसन तथा सूर्यनमस्कार किये।

उसी प्रकार औरंगाबाद में भी गुरुहरि काकाजी उद्यान में आंतरराष्ट्रीय योगदिन प.भ. नरेशभाई मुले और कई हरिभक्तों की उपस्थिति में मनाया गया। सबसे पहले दीपप्रागट्य के साथ इस योगदिन का प्रारंभ हुआ। प.भ. उज्ज्वलाबहन तथा साथीओंने विशिष्ट योग के आसन भी करवाये।

International Yoga Day celebration at Sambhaji Nagar

❊ शुक्रवार, दि. २१ जून को शिकागो के वोकिगन मंदिर का ४२वाँ पाटोत्सव प.पू. दिनकरभाई और स्थानिक हरिभक्तों की उपस्थिति में मनाया गया। साथ ही ठाकोरजी को विशिष्ट अन्नकूट भी अर्पण हुआ और बाद में दिनकरभाईने आशीष दिये।

42nd Patotsav of Waukegan temple, Chicago

❊ शनिवार, दि. २२ जून को गोंडल के पूराने मंदिर के पू. आनंदस्वामीजी और वीरपुर के पू. निर्मलस्वामीजी (राजकोट गुरुकुल के अधिष्ठाता प.पू. माधवप्रियस्वामीजी के पूर्वाश्रम के छोटे भाई) 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर पधारे थे। उन्होंने गोंडल मंदिर के साथ जुडी हुई गुणातीतानंदस्वामी की अद्भुत महिमा की बातें की और निर्मलस्वामीजीने भी जो साधना की है उसकी बात की। उनकी बातें सुनकर सभी बहुत खुश हुए। दोनों संतोने सभीको गोंडल और वीरपुर मंदिर आने का खास निमंत्रण दिया। पवई के संतभाईयों द्वारा उनके अभिवादन के साथ इस सभा की पूर्णाहुति हुई।

P. Aanandswamiji and P. Nirmalswamiji at "Akshardham" Temple, Powai

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 18 09-08-2024 18:39:54

❊ **रविवार, दि. २३ जून को सुबह में MESO के वरिष्ठ संचालक तथा सद्‌भाव फाउन्डेशन और दिपशीखा ट्रस्ट से घनिष्ठरुप से जुडे सु.श्री. नीताबहन दोशी का हीरक महोत्सव बहुत ही भव्यता और आनंद के साथ मुंबई के Wankhede Stadium के BCA club house में मनाया गया। पवई से प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई और पू. मननभाई खास उसी समारंभ में गये थे। उन्होंने योगी डिवाईन सोसायटी के साथ जुडकर जो सामाजिक कार्य किया है उसकी सराहना की और वशीभाई तथा पवई मंदिर की ओर से उनको खास प्रशस्ति पत्र भी अर्पण किया। नीताबहन के आग्रह से वशीभाईने वह पढकर दिखाया तो वे एकदम भावुक हो गई और वशीभाई तथा सभी संतभाईयों का बहुत आभार भी व्यक्त किया।**

At Nitaben's 60th Birthday celebration at Churchgate

❊ ❊ ❊

'स्वभाव टाळवानी फेक्टरी...'

(ગયા અંકથી ચાલુ)

ગુણાતીતાનંદસ્વામીના સમયમાં **પૂ. ઉપેન્દ્રાનંદસ્વામી** નામે એક સંત હતા. વડીલ સંત હોવાથી સહુ એમને આદર આપતા. પરંતુ તત્ત્વના દોષોને કારણે તેમને સત્સંગનું જોઈએ એવું સુખ આવતું નહતું. તેઓ એ પ્રત્યે સજાગ તો હતા, પરંતુ નિરૂપાય પણ હતા. તેઓ ગુણાતીતાનંદસ્વામીનો યથાર્થ મહિમા સમજતા હતા. તેથી એક વખત એમણે ખુલ્લા દિલે ગુણાતીતાનંદસ્વામી આગળ આ વાત કરી. તેમના અંતરનો ભાવ જાણી ગુણાતીતાનંદસ્વામીએ તેમના પર કૃપા કરી તે પળથી એ દોષો એમને પીડવા લાગ્યા નહીં. આમ મોટાપુરુષની દૃષ્ટિ અને આશીર્વાદથી ન ટળે એવા સ્વભાવ કે દોષ પળ માત્રમાં ટળી શકે છે. તે માટે ખરેખરી સુરુચિ હોવી જોઈએ.

સંતવર્ય પૂ. દાસસ્વામીજીનો પ્રસંગ તો આપણે સહુ જાણીએ જ છીએ. શરૂઆતનાં વર્ષોમાં જ્યારે ગુરુહરિ કાકાજી અને બ્ર.સ્વ. હરિપ્રસાદસ્વામીજીએ સહુ વડીલ સંતોને સ્નેહલ ભાવથી સાથે રહેવા કહ્યું હતું ત્યારે સ્વભાવિક પ્રકૃતિને કારણે દાસસ્વામીજીને એમ હતું કે મારાથી પ.પૂ. પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી અને પ.પૂ.કોઠારીસ્વામીજી સાથે મૈત્રી થશે જ નહીં. તેથી તેમણે એ દિશામાં પ્રયત્ન જ કર્યો નહતો. પરંતુ તેમની અંતરની સુરુચિ ખૂબ જ પ્રબળ હતી અને તેઓ જાગ્રત હતા તો તેમણે કાકાજીને આ બાબત વાત કરી અને કહ્યું કે 'મારાથી તમે કહેલ સૂચન સ્વીકારી શકાશે નહીં.' ત્યારે કાકાજીએ રાત્રિની પ્રાયશ્ચિત્તરૂપ પ્રાર્થનાનો ઉપાય તેમને સૂચવ્યો અને એમ પણ કહ્યું કે 'મારે મૈત્રી કરવી નથી એમ નહીં, પણ મારાથી થઈ શકતી નથી તો તમે બળ આપો. એવી પ્રાર્થના કરજો.' દાસસ્વામીજીએ સાચા દિલ અને પ્રામાણિકતાથી એ ઉપાય અજમાવ્યો તો થોડા જ વખતમાં પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી અને કોઠારીસ્વામીજી સાથે કદી છૂટા જ પડી ન શકાય એવી ગાઢ મૈત્રી થઈ ગઈ. અદ્‌ભુત સુરુચિ, નિષ્કપટભાવ અને સાચા દિલની પ્રાર્થનાનું કેવું સુંદર પરિણામ આવ્યું!

હરિધામના સંત **પૂ. યોગીસ્વરૂપસ્વામીજીને** ગુલાબજાંબુ ખૂબ જ ભાવતાં હતાં. જ્યારે ગુલાબજાંબુ રસોઈમાં આવે ત્યારે તે એના તરફ તેમની રુચિ હોવાથી તેમનાથી વધુ ખવાઈ જતાં હતાં. તેમને એ બાબત ખ્યાલ તો હતો પરંતુ તેમની ભાવતી વસ્તુ મળતી હતી એટલે એ તરફ સહેજે જ તેઓને રુચિ રહેતી. કાકાજીને આ વાતની ખબર પડી તેથી જ્યારે તેઓ તારદેવ મંદિરે આવ્યા ત્યારે એક દિવસ તેમણે ઘણાં બધાં ગુલાબજાંબુ મંગાવ્યાં અને યોગીસ્વરૂપસ્વામીજી ધરાઈ જાય ત્યાંસુધી તેમને ગુલાબજાંબુ ખવડાવ્યાં. એ પછી તે જ દિવસે સાંજે

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 19 09-08-2024 18:39:54

ભજીયાનો પ્રોગ્રામ થયો ત્યારે મરચાનાં ભજીયાં બનાવ્યાં હતાં. કાકાજીએ એક લવિંગ્યા મરચાનું ભજીયું લીધું અને યોગીસ્વરૂપસ્વામીને કહ્યું કે 'યોગી, આ ગુલાબજાંબુ.' યોગીસ્વરૂપસ્વામીજી તો ગુલાબજાંબુનું નામ સાંભળી કાકાજી પાસે આવ્યા, પરંતુ હાથમાં મરચાનું ભજીયું જોઈ એમને થયું કે આ હું કેવી રીતે ખાઉં? પરંતુ કાકાજીએ આપ્યું હોવાથી તેમણે તરત જ મોઢામાં મૂકી દીધું. એ મરચાનું ભજીયું એટલું બધું તીખું હતું કે યોગીસ્વરૂપસ્વામીજીની આંખમાં પાણી આવી ગયાં. એમની જગ્યાએ કોઈ બીજી વ્યક્તિ હોત તો તરત જ એ મરચું થૂંકી નાંખ્યું હોત, પરંતુ યોગીસ્વરૂપસ્વામીજીને કાકાજીનો મહિમા હતો તો એમણે આપેલો એ ભજીયારૂપી પ્રસાદ તેઓ ગુલાબજાંબુ જેટલા જ ભાવથી ગ્રહણ કર્યો અને ત્યાં જ ચમત્કાર થયો! એ પછી એમને ક્યારેય પણ ગુલાબજાંબુ માટેની પહેલાં જેવી રુચિ રહી નહીં. એટલે સુધી કે એમની સામે ગુલાબજાંબુની થાળી પડી હોય તો પણ વધારે ગુલાબજાંબુ લેવાનું એમને મન થાય નહીં. આમ મોટાપુરુષને વચને એમણે સહેજ સુરુચિ બતાવી તો એમની એ સ્વાદવૃત્તિ નીકળી ગઈ!

વિદ્યાનગરની સરદાર પટેલ યુનિર્વસિટીના માજી કુલપતિ **આર.ડી. પટેલ (પૂ. આર.ડી.કાકા)** ખૂબ જ કડક સ્વભાવના હતા. સંતભગવંત સાહેબજી જ્યારે અભ્યાસ કરતા હતા ત્યારે એમણે ઓછી હાજરી અને અભ્યાસમાં બરાબર ધ્યાન આપ્યું ન હોવાથી સાહેબજીને M.Sc.માં Admission આપવાની ના પાડી દીધેલી. તે વખતે બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજના વચને સાહેબજી કાકાજીની સાથે રહી અક્ષરપુરુષોત્તમ છાત્રાલયના નિર્માણ કાર્યમાં જોડાયા હતા. જો કે પાછળથી કાકાજીના કહેવાથી યોગીજી મહારાજે આશીર્વાદ આપ્યા હતા અને આર. ડી.કાકાએ સાહેબજીને ફોર્મ પણ આપ્યું હતું ને સાહેબજી ઉત્તીર્ણ પણ થઈ ગયા હતા. પાછળથી આર.ડી.કાકાને સાહેબજી અને તેમના સાથીદારોના વર્તનથી ખૂબ જ ગુણ આવ્યો હતો અને તેઓ પાકા સત્સંગી થયા હતા. કોઈ કારણસર તેમને કાકાજી માટે પૂરેપૂરી શ્રદ્ધા અને ભાવ હતો નહીં. વિદ્યાનગરમાં કાકાજીની કથા સાંભળતાં એમ આવ્યું કે જે કોઈપણ અમારી એક અઠવાડિયાની શિબિરમાં આવશે એને ખૂબ ફાયદો થશે. આથી આર.ડી.કાકાએ કાકાજી પાસે આવી શિબિરનો લાભ લેવાની તૈયારી બતાવી.

તેઓ કાકાજી પાસે આવ્યા ત્યારે કાકાજી તો એમની સ્વાભાવિક ક્રિયા મુજબ ચાંચવાળી ટોપી અરીસા સામે જોઈ વ્યવસ્થિત પહેરતા અને રેશમી ઝભ્ભો અને મોજડી વગેરે જોઈને સાત્વિક વૃત્તિવાળા આર.ડી.કાકાને થયું કે આ આધ્યાત્મિક પુરુષ કેવી રીતે હોઈ શકે? પરંતુ તેઓ ખુલ્લા દિલના હતા અને તેઓ સામેથી શિબિરનો લાભ લેવા આવ્યા હતા તેથી તેમણે મનમાં ગાંઠ જ વાળી દીધી હતી કે મારે કાકાજીની પરીક્ષામાં પાસ થવું જ છે. તેથી તેમણે કાકાજી આગળ પોતાનું ઉપકુલપતિનું પદ કે બુદ્ધિ કશું જ ગણકાર્યું નહીં અને જેમ રઘુવીરજી મહારાજ ગુણાતીતાનંદસ્વામી પાસે આચાર્યપદપણાનું માન અને મોભો છોડીને તીર્થવાસી થઈ સમાગમ કરવા ગયા હતા એવી જ રીતે આર.ડી.કાકા કાકાજી પાસે રહ્યા. એટલે સુધી કે કાકાજી 'ચા પીશો કે કૉફી' જેવા સામાન્ય પ્રશ્ન પણ કરે તો આર.ડી.કાકા 'આપ કહો એમ' એટલું જ ફક્ત બોલે અને કાકાજી જે સૂચવે કે ગોઠવે એ પ્રમાણે બધા જ કાર્યક્રમોમાં ગોઠવાઈ જતા. એ રીતે એમણે ૭ દિવસ કાકાજીનો લાભ લીધો. તો પરિણામ એ આવ્યું કે પ્રથમ દિવસે કાકાજીને માટે તેમને જે ભાવ હતો તેમાંથી તદ્દન જ જુદો આધ્યાત્મિક પુરુષ તરીકેનો ભાવ દિલમાં

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 20 09-08-2024 18:39:58

થઈ ગયો અને તેમણે સાતમે દિવસે એવું કહ્યું કે 'મેં કાકાજીને પહેલે જ દિવસે એમના બાહ્ય ક્રિયાયોગો જોઈને **Minus Mark** આપ્યા હતા, પરંતુ આ શિબિર પછી હું એમને **A+** ની કક્ષામાં મૂકું છું.' આમ સુરુચિ અને ખરેખરો ખપ હતો તો આર.ડી.કાકા જેવા વિચક્ષણ અને મૂર્ધન્ય વ્યક્તિને પણ અદ્‌ભુત ફાયદો થયો!

ગુરુહરિ કાકાજી હંમેશાં કહેતા કે 'તમારે ખરેખર આધ્યાત્મિક ફાયદો જોઈતો જ નથી. તમારી પ્રાથમિકતામાં તમારી મનગમતી ચીજો, તમારી નોકરી–ધંધો–પ્રતિષ્ઠા, તમારા કુટુંબીજનો–સગાંવ્હાલાં અને છેલ્લે ભગવાનનો નંબર લગાડો છો. તમે ફક્ત બોલવામાં જ ભગવાનને પહેલો નંબર કહો છો, પરંતુ વાસ્તવમાં ભગવાનનો પહેલો નંબર હોતો નથી, પણ છઠ્ઠો કે સાતમો હોય છે. તો પછી કેવી રીતે કામ બને?' પરંતુ ભગવાન પાસે આપણે જો સરળ અને ખુલ્લા દિલના રહીએ અને ભગવાન અને પ્રગટ સંતની આજ્ઞા મુજબ જ વર્તવા માટે જ ફક્ત સુરુચિ પણ ધરાવીએ તો તેઓ સામેથી સંજોગો એવા ગોઠવે કે આપણે ભગવાન રાજી કે સંત રાજી થાય એ પ્રમાણે વર્તી શકીએ. પણ એ માટેની આપણી તૈયારી તો હોવી જ જોઈએ!

ગુરુહરિ કાકાજીના જીવનમાં જોઈએ તો અગણિત પ્રસંગો છે કે જ્યારે તેમણે પ્રાધાન્ય શાસ્ત્રીજી મહારાજ અને યોગીજી મહારાજની આજ્ઞા કે મરજીને આપ્યું હોય. તો તેમના જીવન પરથી આપણને આપણા જીવનમાં કોને પ્રાથમિકતા આપવી અથવા ભગવાન અને સંતને પ્રાથમિકતા આપવામાં કઈ રીતે વર્તવું તેનો અંદાજ આવી જ જશે. કાકાજી તો કહેતા કે **'તમારે ખરેખર સ્વભાવ કાઢવો છે? તો અહીં તો સ્વભાવ કાઢવાની ફેક્ટરી છે. તમારે જે પણ સ્વભાવ કાઢવો હોય તે સરળતા ને લહેજતથી નીકળી શકશે.'** જગતમાં કે બીજે બધે જ સ્વભાવ કાઢવો એટલે શું એ વાતની જ ખબર નથી અને જરાક ખબર પણ હોય તો એ કેવી રીતે નીકળી શકે એનો પણ કોઈને ખાસ ખ્યાલ નથી. અંનત સાધનો કરવા છતાં પણ એવું કહેવાય છે કે સ્વભાવ અને પ્રકૃતિ તો લાકડે જ જાય. અર્થાત્ મૃત્યુ સુધી એ આપણી સાથે જ રહે. સ્વામિનારાયણ ભગવાને વચ.ગ.મ. ૩૭માં પણ કહ્યું છે કે **'સ્વભાવ મૂકાવ્યા સારુ જે સત્પુરુષ ઉપદેશ કરતા હોય તેના વચનને વિશે અતિશય વિશ્વાસ હોય અને ઉપદેશના કરનારાની ઉપર સાંભળનારાને અતિશય પ્રીતિ હોય અને ઉપદેશનો કરનારો હોય તે ગમે તેટલાં દુખવીને કઠણ વચન કહે તો પણ તેને હિતકારી જ માનતો જાય, તો સ્વાભાવિક જે પ્રકૃતિ છે તે પણ નાશ થઈ જાય, પણ એ વિના બીજો કોઈ ઉપાય નથી. માટે જેને પોતાની પ્રકૃતિ ટાળ્યાની ઈચ્છા હોય તેને પરમેશ્વર તથા સત્પુરુષ તે સ્વભાવ ટાળ્યા સારુ ગમે તેટલા તિરસ્કાર કરે ને ગમે તેવાં કઠણ વચન કહે તો પણ કોઈ રીતે દુખાવું નહીં ને કહેનારાનો ગુણ જ લેવો, એવી રીતે વર્તે તો કોઈ રીતે ન ટળે એવી પ્રકૃતિ હોય તોય પણ તે ટળી જાય છે.'** તો આપણને આવા ગુણાતીત સત્પુરુષો અને ભગવદીઓનો જોગ મળ્યો છે, આવો સરસ મનુષ્ય દેહ મળ્યો છે, આવા સરસ સંજોગો છે તો પછી આપણે એ તમામ સાનુકૂળ સંજોગોનો શ્રેષ્ઠ ઉપયોગ કેમ ના કરીએ?

ગુરુહરિ કાકાજી મહારાજના ૧૦૬મા પ્રાગટ્યપર્વે અને ગુરુપૂર્ણિમાના પાવન અવસરે આવી સુરુચિ અને સરળતા માટે ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરુહરિ કાકાજી અને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપોને ચરણે પ્રાર્થના કરીએ.

❋ ❋ ❋

अक्षरधामगमन

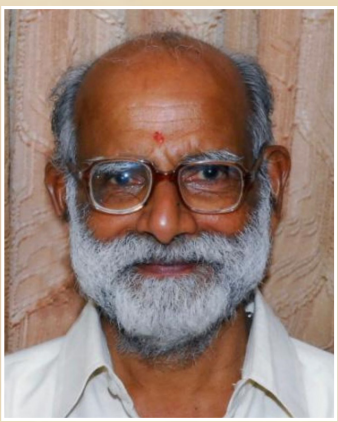

❋ बोरीवली, मुंबई में रहनेवाले सेवाभावी एवं सरल ऐसे प.भ. उन्नीकृष्णन पन्नीकर (उम्र-८३) काफी समय बीमारी से जूँझकर गुरुवार, दि. २७ जून को अक्षरनिवासी हुए।

अपने परिवार में वे ८ भाई-बहन थे। उनमें से उन्नीकृष्णन चौथे बेटे थे फिर भी सभी की जिम्मेदारी उन्होंने सँभाली। B.Sc. की डिग्री प्राप्त कर उन्होंने केरला में शिक्षक का कार्य किया। कुछ समय बाद वे मुंबई आये

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 21 09-08-2024 18:39:58

Trayodashi Mahapooja of P.B. Unnikrishnanji at "Akshardham" Temple, Powai

और Nair Hospital में उन्होंने नौकरी की। वहाँ काम करते हुए उन्होंने Biochemistry में M.Sc. की डिग्री प्राप्त की और Senior Scientific Officer की पदवी के रुप में निवृत्त हुए। सन् १९८० में उन्होंने प.भ. प्रभावतीबहन के साथ शादी की और उनके घर पुत्री (प.भ. श्रीदेवीबहन) का जन्म हुआ।

उन्नीकृष्णनजी आध्यात्मिकता में बहुत मानते थे इसलिये वे करीब ५-६ घंटे तक भागवत, रामायण जैसे शास्त्र पढते थे। वे उनके मलयालम भाषा के ग्रुप द्वारा मुंबई में जहाँ भी भागवत सप्ताह होते थे वहाँ वे जरुर जाते थे। हररोज सुबह करीब ३ घंटे तक भजन करने के बाद ही वे नौकरी पर जाते थे और शाम को भी वैसे ही ३ घंटे भजन करने के बाद ही अन्य कार्य करते थे। शायद उनके भजन से ही उन्हें Nair Hospital में नौकरी के दौरान प.भ. प्रतिमाबहन परीख से पहचान हुई और वे गुरुहरि काकाजी महाराज के जोग में आ गये। उनका नाम उन्नीकृष्णन था, लेकिन काकाजी उन्हें **'सुंदरम्'** कहकर बुलाते थे। कई साल तक वे उसी प्रकार उनको बुलाते थे, फिर उन्नीकृष्णन को पता चला कि शायद उनकी आत्मा को जानकर ही काकाजी उन्हें 'सुंदरम्' कहते थे।' काकाजी उनपर बहुत राजी थे, जिसके कई प्रसंग 'जेवा में निरख्या रे' पुस्तक में लिखे है। बाद में वे प.भ. दिव्यामासी के संपर्क में भी आये जिससे पूरा नायर ग्रुप सत्संग में ज्यादा प्रवृत्त हुआ। काकाजी के स्वधाम जाने के बाद वे सहज ही पवई के संतभाईयों के साथ जुड गये। प.पू. दिनकरभाई, प.पू. महेन्द्रबापु, प.भ. भरतभाई, प.भ. वशीभाई, पू. योगिनीबहन और पवई के सभी संतभाईयों, संतबहनों के साथ उनकी आत्मीयता ज्यादा बढी। वे हमेशा काकाजीने बताये **4 Point Programme** नियमितरुप से करते थे। जब तक सेहत अच्छी थी तब तक हर महिने की दि. ७ की भजन संध्या में वे पवई आते थे और सभी के साथ हर जगह शिबिर-समैया में भी जाते थे। अपनी और अपनी पत्नी की सेहत अच्छी न होते हुए भी उन्होंने कभी कोई भी फरियाद किये बिना केवल प्रभु को प्रार्थना ही की और हमेशा हरेक संजोगो में प्रभु की ही मर्जी मानकर सभी तकलीफों का स्वीकार किया।

सालों तक उनकी पुत्री श्रीदेवीबहन, उनके दामाद प.भ.डॉ. जयराजभाई नायरने उनकी बहुत ही अच्छी सेवा की।

दि. १४ जुलाई को **'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई** में सभी संतभाईयों और संतबहनों तथा अन्य हरिभक्तों की उपस्थिति में उनकी **त्रयोदशी की महापूजा** की और श्रीदेवीबहनने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया और अपने पिता के जैसी भजन-सेवा-भक्ति के लिये प्रार्थना की।

भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी और सभी गुणातीत स्वरुपों उन्नीकृष्णनजी की आत्मा को सदैव अपने साथ रखें और उनके परिवार को इस दुःख से उभरने के लिये बल दे वही प्रार्थना।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 22 09-08-2024 18:39:58

चातुर्मास के नियम

बुधवार, दि. 17 जुलाई, 2024 नियमी एकादशी से चातुर्मास पर्व का प्रारंभ हो रहा है। तो हम सभी भगवान स्वामिनारायण और गुणातीत संत की प्रसन्नता हेतु निम्नलिखित नियमों में से पाँच नियमों का पालन करने का संकल्प करें।

1. भगवान स्वामिनारायण एवम् गुणातीत सत्पुरुषों के जीवन चरित्र अथवा भक्तों के माहात्म्य दर्शन के प्रसंगो में से किसी भी एक का उनके रहस्यार्थ के साथ नित्य अध्ययन करें और उसे डायरी में लिखें।

2. चातुर्मास या श्रावण का पूरा महिना एक समय भोजन लें और चातुर्मास में आनेवाली सभी एकादशी प्रवाही (Liquid) या फलाहार लेकर करें। सायं ६ बजे के बाद भोजन न करें।

3. रोज ४० मिनिट 'स्वामिनारायण महामंत्र' का अजपाजप (श्वासोश्वास के साथ मंत्र जाप) करते हुए तेज वॉकिंग करें।

4. दो भगवदी (बहनों के लिए बहनीं और भाईयों के लिए भाईयों) और चार हरिभक्तों के साथ आत्मीयता बढायें। कोई भी पांच हरिभक्तों को व्यक्तिगतरुप से मिलने जाये या टेलीफोन द्वारा हररोज संपर्क करके सत्संग का महिमागान करें।

5. चातुर्मास दौरान मंदिर में यथाशक्ति महापूजा करवायें।

6. नित्य प्राणायाम का अभ्यास योग शिक्षक की सलाह अनुसार 30 मिनट अवश्य करें।

7. अपने एक या दो साथी मुक्तों का एक गुण विस्तृत रुप से नित्य अवश्य लिखें। (पति-पत्नी जरुर लिखें।)

8. घर में पकाया हुआ ही खाना खाये। बाहर से ना मंगाये।

9. गुणातीत स्वरुपों की सेहत अच्छी रहे उसके लिये हररोज सवा घंटा धुन अवश्य करें।

10. हरेक क्रिया में स्वामिनारायण मंत्र का जाप करते रहे, प्रभु का स्मरण करते रहे।

अन्य विशिष्ट नियमों (खास बालकों के लिये)

11. कम से कम दो मित्रों को बालसभा में आने के लिये कहना।

12. मोबाईल का त्याग करना। (मोबाईल का उपयोग केवल बात करने के लिये ही करें। लेकिन सोशियल मिडिया, युट्युब, गेम जैसे अन्य वस्तुओं के लिये नहीं करें।

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 23 09-08-2024 18:39:58

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Bhajan Sandhya on 7th June at Megaragus Hall. (2) Guruhari Kakaji Maharaj's 106th Pragatyadin celebration at Megaragus Hall on 8th June. (3) Visit by P.P. Vashibhai and P. Ashwinbhai at Delhi for Guruhari Kakaji Maharaj Pragatyadin celebration and "Sahradayi" book Parayan on 9th to 13th June. (4) Visit by P.P. Bharatbhai and Devotees at Manavadar for Patotsav from 10th to 14th June. (5) Online Youth Shibir at "Akshardham" Temple, Powai from 14th to 16th June. (6) Celebration of International Yoga Day at Megarugas Hall in the presence P.P. Bharatbhai, P.P. Vashibhai, P.B.Dr. Deepakbhai Parmar and various dignitaries and also at Sambhaji Nagar on 21st June. (7) Waukegan (Chicago) Temple Patotsav celebration on 21st June. (8) P. Aanandswamiji from Gondal and P. Nirmalswamiji from Virpur -- at "Akshardham" Temple, Powai on 22nd June. (9) Kumari Shri. Nitaben Doshi's Diamond Jubilee celebration at BCA club in Mumbai on 23rd June. (10) Homage to P.B. Unnikrishnan his Akshardhamgaman on 22nd June. (11) Article for Guruhari Kakaji Maharaj's 106th Pragatyadin on 12th June. (12) Niyam for Chaturmas starting from 17th July.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001
& Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta

Snehal Sindhu Jul 2024-V07 (kajal).indd 24 09-08-2024 18:39:59